IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

प्रभु श्रीकृष्ण जन्म स्थान मंदिर (कटरा केशवदेव)

AJAY PARTAP SINGH (Researcher)
Advocate high court Allahabad, Prayagraj
M. Sc (Organic chemistry), B.ed, LLB

मध्य कालीन युग रियासत कालीन युग था आधुनिक भारत भिन्न भिन्न रियासतों में बंटा हुआ था, उन्ही में से एक रियासत हुआ करती थी ओरछा राज्य जो कि वर्तमान में मध्य प्रदेश के जिला निवाड़ी में स्थित है | मुग़ल शासक जहाँगीर के समकालीन ओरछा राज्य के शासक राजा वीरदेव सिंह बुंदेला थे, इनके पिता का नाम मधुकर शाह बुंदेला था । राजा वीरदेव सिंह बुंदेला एक धर्मपरायण व प्रजा पालक राजा थे, वे शिल्पकला में भी रूचि रखते थे । उन्होंने अपने जीवन काल में अनेक ऐतिहासिक इमारतों व मंदिरों का निर्माण करवाया था, जिनमें झाँसी का किला, दतिया का किला, बरसाना का लाडली जी का मंदिर, बनारस का मणिकर्णिका घाट, ओरछा का चतुर्भज जी मन्दिर आदि । जिनमें मथुरा स्थित कटरा केशवदेव मंदिर या केशोराय मंदिर का निर्माण कार्य भी वीरदेव सिंह बुन्देला के द्वारा करवाया गया था, जिसे वर्तमान में श्री कृष्ण जन्मस्थान मंदिर के नाम से जाना जाता है ।

राजा वीरदेव सिंह बुंदेला एक दूर दर्शी शासक थे | उनके शासनकाल में एक बार भंयकर अकाल पड़ा और चारों तरफ प्रजा में भुखमरी और बेरोजगारी की स्थिति उत्पन्न हो गयी | उस स्थिति से निपटने और प्रजा की रक्षा करने हेतु राजा वीर देव सिंह बुंदेला योजनाबद्ध तरीके से एक साथ भिन्न भिन्न जगहों पर 52 ऐतिहासिक व धार्मिक इमारतों का निर्माण कार्य 05 माघ सुदी वि० सं० 1675 (दिसंबर 1618) को करवाना आरम्भ किया | जिससे प्रजा को रोजगार मिल सके व उनके भोजन का प्रबंध हो सके । उन्हीं धार्मिक स्थलों में मथुरा का श्रीकृष्ण जन्मस्थान मंदिर (केशोराय मंदिर या कटरा केशवदेव मन्दिर) व बरसाना का लाडली जी का मंदिर भी शामिल हैं । राजा वीरदेव सिंह बुंदेला ने उस दौरान 33 लाख रूपये की लागत से श्रीकृष्ण जन्मस्थान मंदिर का निर्माण करवाया था।[1]

विभिन्न इतिहासकारों व विदेशी यात्रियों के यात्रा वृतान्त के माध्यम से हमें पता चलता कि केशव देवराय मन्दिर इतना भव्य और विशाल था कि कई मील दूर से उसे देखा जा सकता था | किन्तु वर्तमान समय में जिस मंदिर को श्रीकृष्ण जन्मस्थान मंदिर कहा जाता है वह राजा वीरदेव सिंह बुंदेला द्वारा बनवाया गया मंदिर का भवन नहीं है | राजा वीरदेव सिंह बुंदेला द्वारा बनवाया गया श्रीकृष्ण जन्मस्थान मंदिर के मूल गर्भ को शाही मस्जिद ईदगाह के नाम से जाना जाता हैं जिसपर मुगल शासक औरंगजेब ने अतिक्रमण कर मस्जिद के रूप में प्रयोग किया।

फ्रेंच यात्री व व्यापारी जीन वैप्टिस्ट टैवरनियर ने श्रीकृष्ण जन्मस्थान मंदिर को देखा था व उसका आँखों देखा वर्णन अपनी पुस्तक Travels in India में किया है। टैवरनियर ने लिखा है कि राजा वीरदेव सिंह बुंदेला ने 5 **माघ सुदी वि० सं०** 1675 (**दिसंबर** 1618) को श्रीकृष्ण जन्मस्थान मंदिर का निर्माण कार्य शुरू करवाया था,[(2)] 5 माघ सुदी को हिन्दुओं का बंसत पंचमी का त्योहार होता है।

"**टेवरनियर ने लिखा है** कि यह पवित्र मंदिर बहुत बडा, बहुत शानदार व ऊँचा था जो 5-6 कोस की दूरी से दिखता था। यह मंदिर लाल पत्थर से बना था जोकि आगरा के पास की खदानों से लिए गये थे। मंदिर को बनाने में पत्थर की बड़ी-बड़ी पट्टियों का उपयोग किया गया था जो 15 फीट लंबी, 9-10 फीट चौडी और 6 अंगुल से ज्यादा मोटी नहीं थी, इनको अपनी इच्छानुसार ढाला जा सकता था। यह मंदिर कटे हुए पत्थर से बने अष्टभुजीय आकार के विशाल चबूतरे पर खड़ा है जिसके चारों ओर जानवरों के दो समूह है मुख्य रूप से बंदरों को उभरे हुए रूप में उकेरा गया है। इन जानवरों का एक समूह भूतल से 2 फीट की दूरी (संभवतः ऊँचाई) दूसरा अष्टभुजीय आकार के विशाल मंच के तल से 2 फीट की दूरी पर है। ऊपर की ओर दो तरफ से सीढ़ियाँ जाती हैं जिनमें प्रत्येक में 15 या 16 सीढ़ियाँ हैं जोकि 2 फीट लंबी है जिनपर दो व्यक्ति एक साथ नहीं चढ़ सकते हैं । इनमें से एक सीढ़ी मंदिर के मुख्य द्वार को जाती है और दूसरी भजन-कीर्तन मंडली (संभवतः मंदिर के पीछे खुले स्थान) के पीछे की ओर। मंदिर अष्टभुजीय आकार के मंच के आधे भाग पर स्थित है और आधा मंदिर के सामने खुला स्थान है। इसका आकार अन्य मंदिरों की तरह है इसके ऊपर बीच में एक बडा गुबंद है जिसके अगल-बगल में दो अन्य गुबंद है। मंदिर के बाहरी हिस्सों में आधार से शिखर तक जानवरों की कई आकृतियाँ देखी जा सकती हैं जिनमें मेढ़े, बंदर व हाथी प्रमुख है जोकि पत्थर में उकेरे गये हैं और मंदिर के चारों तरफ आले हैं जहाँ पर अलग-अलग राक्षस हैं। तीनों गुंबदों में से प्रत्येक के निचले भाग से लेकर शिखर तक बीच-बीच में 5 से 6 फीट ऊंची खिड़कियाँ हैं और प्रत्येक पर एक प्रकार की बालकनी है जहाँ चार व्यक्ति बैठ सकते हैं। प्रत्येक बालकनी छोटी छतरी से ढकी है जिनमें से कुछ चार स्तंभों पर टिकी है कुछ आठ पर टिकी है लेकिन वे जोड़े में है और एक-दूसरे के संपर्क में है। इन गुंबदों के चारों ओर आकृतियों से भरी हुई जगहें भी हैं जो राक्षसों को दर्शाती हैं, एक की चार भुजाएँ हैं, दूसरे की चार पैर हैं, उनमें से कुछ के शरीर पर जानवरों के सिर हैं, सींग और लंबी पूंछ हैं जो उनके पैरों के चारों ओर घूमती हैं। आखिरकार, बंदरों की असंख्य छवियां हैं, और आंखों के सामने इतने सारे बदसूरत चित्रण होना एक भयानक बात है। मंदिर में केवल एक दरवाजा है, जो बहुत ऊंचा है और दोनों तरफ पुरुषों और राक्षसों के कई स्तंभ और चित्र हैं। भजन-कीर्तन मंडली वाला स्थान जोकि 5 से 6 इंच व्यास के पत्थर के स्तंभों से बने एक बैरिकेड से घिरा हुआ है, और प्रमुख ब्राह्मणों को छोड़कर कोई भी इसमें प्रवेश नहीं कर सकता है, जिनकी पहुंच एक छोटे से गुप्त दरवाजे से होती है जिसे मैं नहीं देख सकता । मैंने इस मंदिर में उपस्थित वहां मौजूद कुछ ब्राह्मणों से पूछा कि क्या मैं महान राम राम (प्रभु श्रीकृष्ण), यानी महान मूर्ति देख सकता हूँ, उन्होंने उत्तर दिया कि यदि मैं उन्हें कुछ दे दूँ तो वे अपने वरिष्ठ ब्राह्मण (वरिष्ठ महंत \ पुजारी) से आज्ञा मांगने जायेंगे, जैसे ही मैंने उनके हाथ में दो रुपये रखे, वो वरिष्ठ ब्राह्ाण (वरिष्ठ महंत \ पुजारी) से आज्ञा मांगने चले गये। मुझे आधे घंटे भी इंतजार नहीं करते हुआ था कि ब्राह्मणों ने एक दरवाजा खोला जो बैरिकेड के बीच में है (क्योंकि बाहर तो कुछ भी नहीं है, बैरिकेड स्वयं बंद है)। मैंने उसके उस पार देखा, दरवाजे से लगभग 15 या 16 फीट की दूरी पर, जोकि एक चौकोर वेदी लग रही थी जो सोने और चांदी की पुरानी जरी से ढकी हुई थी, और उस पर एक बड़ी मूर्ति थी, जिसे वे राम राम (प्रभु श्रीकृष्ण) कहते हैं । उस मूर्ति (प्रभु श्रीकृष्ण की मूर्ति) का केवल सिर देखा जा सकता है, जो काले संगमरमर का है, और उसकी आंखें दो माणिक जैसी प्रतीत होती हैं। उस मूर्ति (प्रभु श्रीकृष्ण की मूर्ति) की गर्दन से लेकर पैरों तक पूरा शरीर लाल मखमल के लबादे से ढका हुआ है जिस पर कुछ कढ़ाई हो

रखी है, और मूर्ति की बाहें दिखाई नहीं दे रही हैं। उसके बगल में 2 फीट या उसके आसपास ऊंचाई की दो अन्य मूर्तियाँ हैं, उन्हें एक ही तरीके से व्यवस्थित किया गया है, सिवाय इसके कि उनके सफेद चेहरे हैं, वो उन्हें बैच्छोर कहते है। मैंने इस मंदिर में 15 से 16 फीट वर्गाकार और लगभग 12 से 15 फीट ऊंची एक मशीन भी देखी, जो चित्रित सूती कपड़े से ढकी हुई थी | यह मशीन चार छोटे पहियों पर टिकी हुई थी, और मुझे बताया गया कि यह वहनीय (चलने फिरने वाली) वेदी थी, जिसपर उनके महान भगवान को पवित्र दिनों में रखा जाता है जब वह अन्य देवताओं से मिलने जाते हैं, और उनके प्रमुख त्योहार के अवसर पर लोगों द्वारा उन्हें नदी पर्ने ले जाया जाता है।" **टैवरनियर** ने मंदिर में प्रमुख मूर्ति के चेहरे को काले रंग का बताया है प्रभु श्री कृष्ण साँवले रंग के थे और उनकी मूर्ति काले रंग की होती है। टैवरनियर ने प्रभु श्रीकृष्ण को मंदिर में रखी पहिये की गाड़ी पर प्रमुख त्यौहार पर नदी के किनारे ले जाये जाने का उल्लेख किया है। प्रभु श्रीकृष्ण का प्रमुख त्यौहार श्रीकृष्ण जन्माष्टमी होता है उस दिन भक्तगण प्रभु श्रीकृष्ण की मूर्ति को यमुना नदी किनारे ले जाते थे। हिन्दू धर्म मान्यताओं व पौराणिक कथाओं में इस बात का उल्लेख है कि वसुदेव जी प्रभु श्रीकृष्ण को उनके जन्म के बाद यमुना नदी पार कर गोकुल छोडकर आये थे, इसी को जन्माष्टमी पर कृष्ण भक्त एक प्रभु श्रीकृष्ण की शोभायात्रा श्रीकृष्ण जन्मस्थान मंदिर से यमुना तट तक निकालकर मनाते थे।

औरंगजेब द्वारा श्रीकृष्ण जन्मस्थान मंदिर पर अतिक्रमण औरंगजेब ने अपने शासन के 13 **वें वर्ष में दिन बृहस्पतिवार**, 27 **जनवरी** 1670, 15 **वें रमजान** के दिन श्रीकृष्ण जन्मस्थान मंदिर को तोड़ने के आदेश जारी कर दिये। औरंगजेब के दरबारी **सकी मुस्ताद खान ने मासिर-ए-आलमगीरी** पुस्तक में लिखा है कि काफिरों के श्रीकृष्ण जन्मस्थान मंदिर (केशोराय का देहरा-हिन्दी में देहरा का अर्थ मंदिर होता है) की नींव को औरंगजेब के अधिकारियों ने कड़ी मेहनत के बाद तोड़ दिया और मंदिर के मँहगे रत्न जड़ित विग्रहों को आगरा की बेगम-साहिब की मस्जिद की सीढ़ियों के नीचे हमेशा के लिए सीढ़ियों पर चढ़ते-उतरते पैरों से कुचलने के लिए दबा दिया।[3]

सकी मुस्ताद खान ने लिखा है कि औरंगजेब ने अपने इस कार्य से हिन्दू राजाओं का गला घोंट दिया और वे दीवार पर टंगी फोटो के समान सब चुपचाप देखते रहे। **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के प्रथम महानिदेशक अलेक्जेंडर कनिंघम की रिपोर्ट** Archaeological Survey of India Report of A Tour in Eastern Rajputana in 1882-83 में लिखा है कि राजा वीर देव सिंह बुंदेला द्वारा अबुल फजल का वध किया गया जिससे खुश होकर जहाँगीर ने वीर देव सिंह बुंदेला को कटरा स्थान पर केशवदेव के मंदिर के पुनर्निमाण की अनुमति दे दी। इस मंदिर को लगभग 40 वर्ष बाद टेवरनियर ने देखा था जिसे टेवरनियर के देखने के 12-15 साल बाद औरंगजेब द्वारा पराभूत कर दिया गया। कनिंघम ने अपनी रिपोर्ट में मासिर-ए-आलमगीरी पुस्तक का उल्लेख करते हुए लिखा है कि औरगंजेब ने कटरा केशवदेव मंदिर के विग्रह आगरा की नबाब कुदिसा बेगम मस्जिद की सीढ़ियों के नीचे हमेशा पैरों से कुचलने के लिए दबबा दिये गये ।[4] अकबर के समय आगरा को अकबराबाद भी कहते थे।

श्रीकृष्ण जन्मस्थान मंदिर (कटरा केशव देव) वर्तमान में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा संरक्षित है। औरंगजेब ने वर्ष 1669 ई० को श्रीकृष्ण जन्मस्थान मंदिर (कटरा केशव देव) पर अवैध कब्जा कर लिया था और श्रीकृष्ण जन्मस्थान मंदिर के भवन के सजावटी सामग्री तोड़कर उसके मूल भवन का उपयोग एक मस्जिद के रूप में करना शुरू कर दिया वर्तमान में श्रीकृष्ण जन्मस्थान मंदिर के मूल भवन को शाही मस्जिद ईदगाह के नाम से जाना जाता है।

वर्ष 1920 में श्रीकृष्ण जन्मस्थान मंदिर (कथित शाही मस्जिद ईदगाह) के भवन को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा संरक्षित कर दिया गया। श्रीकृष्ण जन्मस्थान मंदिर के भवन को **प्राथमिक नोटीफिकेशन संख्या**- UP1465/1133M दिनांक-25-1920 व **अंतिम नोटीफिकेशन संख्या**- UP1669-M/1133 दिनाँक- 27-12-1920 को निम्न विवरण के साथ संरक्षित किया गया था-"The portions of Katra mound which are not in the position of nazul tenants, on which formerly stood a temple of Keshavadeva which was dismantled and the site utilized for the mosque of Aurangzeb."(5) Dismantled शब्द का अर्थ खोल डालना अथवा बाहरी आवरण हटाना होता है।

श्रीकृष्ण जन्मस्थान मंदिर (कटरा केशव देव) की अष्टभुजीय संरचना

राजा वीरदेव सिंह बुंदेला ने श्रीकृष्ण जन्मस्थान मंदिर की निर्माण एक अष्टभुजीय मंच (प्लेटफार्म) पर करवाया था जिसकी लंबाई 804 फीट व चौडाई 653 फीट थी।(6)

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के प्रथम महानिदेशक अलेक्जेंडर कनिंघम की रिपोर्ट Archeological Survey of India Four reports made during the years 1862-62-64-65, Volume-1 **की प्लेट संख्या-**XXXIX में श्रीकृष्ण जन्मस्थान मंदिर (कटरा केशवदेव) की अष्टभुजीय संरचना के नक्शा दिया गया है जोकि PLAN OF THE KATERA showing the foundations of the TEMPLE OF KESAVA RAI behind the Jamai Masjid नाम से है। इस अष्टभुजीय संरचना की लंबाई 804 फीट व चौडाई 653 फीट है।

वर्तमान में श्रीकृष्ण जन्मस्थान मंदिर व शाही मस्जिद ईदगाह के भवन में समानता

औरंगजेब ने वर्ष 1670 ई० में श्रीकृष्ण जन्मस्थान मंदिर को पूरी तरह न तुड़वाकर उसके तत्कालीन स्वरुप में परिवर्तन किया था | उस पर अतिक्रमण करके मंदिर की सजावटी सामग्री व हिन्दू प्रतीक चिन्हों की तोड़-फोड़ की व जिनको तोड़ नहीं सका उनको घिसवाकर, परिवर्तित करवाकर उसका मस्जिद के रूप में उपयोग करने लगा | जबकि श्रीकृष्ण जन्मस्थान मंदिर का मूल ढाँचा आज भी संरक्षित है, टैवरनियर द्वारा बताये गये श्रीकृष्ण जन्मस्थान मंदिर व वर्तमान कथित शाही मस्जिद ईदगाह के भवन को देखकर अनेक समानताएं मिलती हैं | भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के विवरणों इस तथ्य की पुष्टि होती है।

श्रीकृष्ण जन्मस्थान मंदिर का निर्माण लाल रंग के पत्थर से हुआ

जीन बैपटिस्ट टैवरनियर ने अपने यात्रा विवरण में बताया कि श्रीकृष्ण जन्मस्थान मंदिर का निर्माण में लाल रंग के पत्थरों का प्रयोग हुआ है यह पत्थर आगरा के निकट पत्थर की खदानों से निकाले गये थे। इन्हीं पत्थरों से आगरा का किला, जहाँनाबाद की दीवालें, राजा का घर, दो मस्जिदें और अन्य सामंतो के घर बने थे। श्रीकृष्ण जन्मस्थान मंदिर के भवन पर ये लाल रंग के पत्थर बडे-बडे टुकडों (स्लेट्स) में बटे थे जिनकी लंबाई लगभग 15 फीट थी और चौडाई 9-10 फीट और मोटाई लगभग 6 अंगुल थी। वर्तमान में शाही मस्जिद ईदगाह के भवन भी लाल रंग के पत्थर से बना है और शाही मस्जिद ईदगाह के भवन की दीवालों पर यही बड़े-बड़े लाल रंग के पत्थर के स्लेट्स आज भी दिखाई देते हैं।

श्रीकृष्ण जन्मस्थान मंदिर के भवन के ऊपर तीन गुबंद

जीन बैपटिस्ट टैवरनियर ने अपने यात्रा विवरण में बताया कि श्रीकृष्ण जन्मस्थान मंदिर के भवन के ऊपर तीन गुंबद थे जिनमें बीच वाला बड़ा और अगल-बगल के दोनों गुंबद अपेक्षाकृत छोटे थे। वर्तमान में कथित शाही मस्जिद ईदगाह के भवन के ऊपर तीन गुंबद है जिसमें बीच वाला बड़ा व अगल-बगल के अपेक्षाकृत छोटे हैं। इन गुंबदो के ऊपर कमल की आकृति बनी है व ऊपर कलश है जोकि हिन्दू शिल्पकला है।

श्रीकृष्ण जन्मस्थान मंदिर का भवन अष्टभुजीय चबूतरे पर खडा था

जीन बैपटिस्ट टैवरनियर ने अपने यात्रा विवरण में बताया कि श्रीकृष्ण जन्मस्थान मंदिर का भवन एक अष्टभुजीय चबूतरे पर खड़ा था। भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग के प्रथम महानिदेशक अलेक्जेंडर कनिंघम ने अपनी पुस्तक Archeological Survey of India Four Reports made during the year 1862-63-64-65 के Volume-I में श्रीकृष्ण जन्मस्थान मंदिर का वर्णन कटरा केशवदेव के नाम से किया है, उन्होने अपनी रिपोर्ट की प्लेट संख्या- 39 में PLAN OF THE KATERA showing the foundations of the TEMPLE OF KESAVA RAI Behind the Jamai Masjid के नाम से अष्टभुजीय चबूतरे का नक्शा दिया है। कनिंघम ने इस अष्टभुजीय चबूतरे की लंबाई 804 फीट व चौडाई 653 फीट बताई है। कनिंघम ने बताया है कि यह अष्टभुजीय चबूतरा जमीन से 25-30 फीट ऊँचा है ठीक यही विवरण टैवरनियर ने अपने यात्रा वृत्तान्त में किया है कि मथुरा में श्रीकृष्ण जन्मस्थान मंदिर बहुत भव्य व बहुत ऊँचा था जोकि 5-6 कोस की दूरी से दिखता था, वर्तमान में कथित शाही मस्जिद ईदगाह का भवन भी भूमि से लगभग 25-30 फीट की ऊँचाई पर स्थित है और बहुत भव्य व बहुत ऊँचा है।

निष्कर्ष

शाही मस्जिद ईदगाह का भवन ही राजा वीरदेव सिंह बुंदेला द्वारा बनवाया गया प्रभु श्रीकृष्ण जन्मस्थान मंदिर का मूल भवन है जोकि वर्तमान में अपनी Dismantled अवस्था में है।

सन्दर्भ सूची :-

1. ओरछा का इतिहास, लक्ष्मण सिंह गौर, पृष्ठ संख्या- 80-83 |
2. ट्रैवल्स इन इंडिया वॉल्यूम-2, जीन बैपटिस्ट टैवरनियर, पृष्ठ संख्या- 240- 243 |
3. मासिर-ए-आलमगीरी, सकी मुस्ताद खान, सर जादूनाथ सरकार द्वारा अनुवादित, पृष्ठ संख्या- 66 ।
4. Archeological Survey of India Report of A Tour in Eastern Rajputana in 1882-83, A. Cunningham, Page no.- 38-39
5. भारतीय पुरातत्व विभाग की प्रारंभिक अधिसूचना संख्या- UP1465/1133M दिनांक- 25-1920 एवं अंतिम अधिसूचना संख्या- UP1669-M/1133 दिनांक 27-12-1920 |
6. Archeological Survey of India Four reports made during the years 1862-62-64-65, Volume-1,A. Cunningham, Page no.- 235.
7. Archeological Survey of India Four reports made during the years 1862-62-64-65, Volume-1, A. Cunningham, प्लेट संख्या- XXXIX.